जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 29 संख्याः 298 प्रभात उदयपुर, बुधवार 31 अगस्त, 2022 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

अगर गहलोत ने मु.मंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया, पर्चा भरने से पहले तो...

...अध्यक्ष बनने के बाद गहलोत सचिन पायलट के मु.मंत्री बनने पर ''वीटो'' लगा सकते हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। इस समय सभी लोगों की नजरें राजस्थान पर लगी हुई हैं कि राज्य कांग्रेस में नेतृत्व-परिवर्तन किस तरह से होगा।

सूत्रों का कहना है कि सोनिया गांधी इस बिन्दु पर सुनिश्चित होना चाहेंगी कि अध्यक्ष पद के नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दें।

ऐसा होने से, राज्य में नये नेता के चुनाव की निर्धारित प्रक्रिया शुरु हो जायेगी। राज्य में पर्यवेक्षक भेजे जायेंगे तथा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि नेतृत्व तथा विधायक इस पद के लिये सही व्यक्ति का चयन करें।

एक वरिष्ठ नेता, जिन्हें राजनैतिक लोगों एवं मामलों का काफी अनुभव है, का कहना है कि अगर अशोक गहलोत के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद तक, सचिन पायलट के चयन की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं होती, तो यह पूरी तरह संभावित एवं संभव है कि गहलोत, पायलट के खिलाफ अध्यक्षीय वीटो लगा देंगे तथा गर्व सहित यह घोषणा कर देंगे कि उन्हें अपने पूर्व पद के लिये एक बेहतर व्यक्ति मिल गया है।

- उनका तर्क होगा, उन्होंने राजस्थान के मु. मंत्री पद के लिये सचिन से बेहतर एक उम्मीदवार ढूंढ लिया है, जो कांग्रेस को विधानसभा चुनाव में शर्तिया जीत हासिल करायेगा।
- ''वीटो'' के खिलाफ नये अध्यक्ष से दो-दो हाथ करना, गांधी परिवार के लिये काफी अटपटी स्थिति बना देगा।
- जैसा कि सर्व विदित ही है, गहलोत का पहला लक्ष्य तो यह है कि, सचिन किसी भी सूरत में मु.मंत्री न बनें तथा गहलोत के बाद राज्य की बागडोर वसुंधरा राजे संभालें, क्योंकि राजस्थान में उनकी सबसे नजदीकी मित्र भाजपा की पूर्व मु.मंत्री राजे ही हैं।
- अगर गांधी परिवार गहलोत के पार्टी अध्यक्ष बनने से पहले, गहलोत से मु.मंत्री पद का इस्तीफा प्राप्त कर लेता है तो, शायद एक बार तो जादूगर को मात मिल ही जायेगी।

ऐसी स्थिति में गांधी परिवार क्या करेगा?

क्या वे नवनिर्वाचित अध्यक्ष का सामना करने का रास्ता अपनाना चाहेंगे?

यही कारण है कि कांग्रेस के बुद्धिमान लोग कह रहे हैं कि अगर कांग्रेस स्वयं को राजस्थान के 2023 के विधानसभा चुनाव जीतने का अवसर देना चाहती है तो सचिन पायलट को यथाशीघ्र राज्य का मुख्यमंत्री बनाना होगा ताकि वे पार्टी कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर सकें, राज्य के दौरे शुरु कर सकें तथा यह सुनिश्चित कर सकें कि बुरी तरह बँटी हुई भाजपा के खिलाफ कांग्रेस की जीत के अच्छे अवसर हैं।

पार्टी नेताओं का कहना है कि अशोक गहलोत के दिल्ली जाते ही गांधी परिवार चतुर गहलोत की युक्तियों को पहले से भाँप कर, उन्हें नाकाम करते हुये, पूर्व व्यवस्थित होकर काम करने की स्थिति में आ जायेगा। ज्ञातव्य है कि इस समय गहलोत के दिमाग में दो एजेंडा हैं, एक तो सचिन पायलट मुख्यमंत्री न बनाये जायें तथा दूसरा राजस्थान की सत्ता कुल मिलाकर वसुंधरा राजे के पास पहुँच जाये।

अब यह बात सर्वविदित ही है कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गरीब सवर्णों को आरक्षण

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। मुख्य

- आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों को उच्च शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिए जाने की संवैधानिक वैधता पर 5 जजों की संविधान बैंच 13 सितम्बर से अंतिम सुनवाई शुरू करेगी।

न्यायाधीश उदय उमेश ललित की अध्यक्षता वाली 5 जजों की संविधान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

माइक्रोचिप संकट?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। ताईवान

- ताईवान पर मंडरा रहे युद्ध संकट को देखते हुए विश्व में माइक्रोचिप संकट पैदा होने की आशंका है, जो कि फोन व ड्रोन का प्रमुख उपकरण है।

के मुद्दे पर छिड़ा संघर्ष विश्व की इलैक्ट्रॉनिक सप्लायी चेन के लिए खतरा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा के चाणक्य अमित शाह ने राजस्थान व बिहार की रणनीति तैयार की

राजस्थान यात्रा का एक प्रमुख ध्येय है, पूर्वमु.मंत्री वसुंधरा राजे के ''महत्व'' को ''न्युट्रलाइज़'' करना

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। भाजपा के ''चाणक्य'' तथा देश के गृह मंत्री अमित शाह तय कर चुके हैं कि वे इस महीने दो विपक्ष-शासित राज्यों- बिहार एवं राजस्थान का दौरा करेंगे तथा शेरों की माँद में जाकर उनको ललकारेंगे।

नीतीश कुमार, जो भाजपा के समर्थन के बिना ही, इस समय भी मुख्यमंत्री हैं, द्वारा भाजपा को धूल चटा दिये जाने के बाद, शाह बिहार में अपनी पार्टी को नई ऊर्जा से भरने की चुनौती स्वीकार करते हुये, 2025 के विधानसभा चुनावों के लिये पार्टी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में किसी विश्वसनीय तथा गतिशील चेहरे को प्रोजैक्ट करेंगे। राजस्थान द्वारा प्रस्तुत चुनौती अपेक्षाकृत बहुत जल्दी सामने आनी है क्योंकि राज्य में विधानसभा चुनाव अगले वर्ष ही, 2024 के लोकसभा चुनाव से सिर्फ छः माह पहले ही होने हैं।

शाह 24 तथा 24 सितम्बर को ''सीमांचल'' क्षेत्र के पूर्णिया तथा किशनगंज में जायेंगे, जो बिहार के मुस्लिम-बहुल तथा सीमावर्ती जिले हैं। 10 से 12 सितम्बर तक गृह मंत्री राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के गृह जिले जोधपुर में होंगे, जहाँ भाजपा ओ.बी.सी. मोर्चा की एक मीटिंग भी आयोजित की जायेगी।

ऐसी रिपोर्टों के बीच कि गहलोत कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में अक्टूबर में दिल्ली चले जायेंगे, इसलिये भाजपा की मीटिंग के लिये जोधपुर का चयन रोचक रहेगा। मेवाड़ तथा मारवाड़ क्षेत्रों के साथ ही, शेखावाटी बैल्ट में भी ओ.बी.सी. तथा आदिवासी समुदाय के मतदाता बहुतायत में हैं। हाल ही में हुये चुनावों में, भाजपा को इस क्षेत्र में बहुत बड़ा चुनावी लाभ हुआ है। शाह राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों, जहाँ पिछले चुनावों में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण हुआ है, में भाजपा की पकड़ को मजबूती देने की रणनीतियाँ तैयार करेंगे। शाह की राजस्थान-यात्रा का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण और भी है- यह है, राज्य में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के महत्व को निष्प्रभावी करना। ज्ञातव्य है कि वसुंधरा राजे की ''अखिल भारतीय'' छवि है तथा उन्हें जाट एवं राजपूत मतदाताओं के साथ ही, मेवाड़ बैल्ट के आदिवासी मतदाताओं की स्वीकार्यता हासिल है।

गजेन्द्र सिंह शेखावत जैसे नेताओं को प्रोजैक्ट करके राजे को दरकिनार करने की भाजपा हाईकमान की कोशिशें पूरी तरह फलदायक नहीं हुई हैं।

- बिहार में भी नीतीश को चुनौती देने के लिये शाह मु.मंत्री पद के एक सशक्त उम्मीदवार का चयन करना चाहते हैं तथा उस चेहरे को अभियान के रूप में प्रचारित भी करना चाहते हैं।

बाबरी विध्वंस केस

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने 1992 में हुए बाबरी विध्वंस से जुड़े केस को मंगलवार को बंद कर दिया।

तीन जजों जस्टिस संजय किशन कौल, अभय एस. ओका और विक्रमनाथ की बैंच ने बाबरी विध्वंस से जुड़े सभी कार्यवाहियों को बंद करने तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी भाजपा नेता उमा भारती और साध्वी ऋतम्भरा तथा अन्य के खिलाफ भी केस बंद कर दिए हैं।

- सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या की बाबरी मस्जिद विध्वंस केस को बंद कर दिया है, इसी के साथ मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, साध्वी ऋतम्भरा के खिलाफ इस केस से संबंधित मुकदमे बंद हो गए हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

के.सी.आर. नीतीश कुमार से मिलेंगे बुधवार को

हैदराबाद से पटना जाना भारी राजनीतिक उथल-पुथल का संकेत

-लक्ष्मण वैंकेट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। बिहार के सत्ता-परिवर्तन के महत्व एवं राष्ट्रीय राजनीति पर इसके प्रभाव को देश के विभिन्न भागों की गतिविधियों में हुई हलचल में देखा जा सकता हैं। अगर उत्तर में, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव भाजपा की लोकसभा सीटों को कम करने, मौजूदा विशाल सांसद संख्या को बहुत कम सीटों तक सीमित करने की कोशिशों की बात कर रहे हैं, तो दक्षिण से, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चद्रशेखर राव बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से विचार-विमर्श करने के लिये बुधवार को पटना पहुँच रहे हैं, जिन्होंने भाजपा को शॉक-ट्रीटमेन्ट के जरिये, गठबन्धन सरकार और गठबन्धन से अलग कर दिया था। नीतीश के इस कदम के फलस्वरूप, पूरे देश में उनके बहुत से राजनैतिक मित्र एवं समर्थक गये हैं तथा उनकी पार्टी तथा आर.जे.डी. नेताओं की तरफ से ऐसे संकेत आने-लगे हैं कि नीतीश कुमार ऐसे व्यक्ति सिद्ध हो सकते हैं जो 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सामना कर सकें। के.सी.आर. जिस नाम से तेलंगाना के मुख्यमंत्री प्रसिद्ध हैं, ने

- के.सी.आर. की भूमिका निर्णायक रही थी, नीतीश का भाजपा से गठबंधन तुड़वाने में।
- नीतीश से पहले तेजस्वी यादव भी के.सी.आर. से मिले थे हैदराबाद में।
- के.सी.आर. के पटना प्रोग्राम का उद्देश्य गलवान घाटी में शहीद हुए भारतीय सैनिकों के परिवारों को दस-दस लाख रूपये का चैक देना है तथा हाल ही में हैदराबाद में हुए अग्निकांड में मृत 12 बिहारी कारिन्दों के परिवारों को भी पांच-पांच लाख रूपये देना है, पर उनकी नीतीश से मुलाकात चैक बांटने की खबरों से ज्यादा राजनीतिक महत्व रख रही है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अगला डेढ़ महीना निर्णायक साबित होगा?

पर, गांधी परिवार की क्या रणनीति है, इसका किसी को कोई खास आभास नहीं है, अतः अफवाहों का बाजार बहुत गर्म है

-डा. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अगस्त। कांग्रेस अव्यवस्था की स्थिति में हैं क्योंकि उसके नेताओं को यह दुविधा सता रही है कि क्या गांधी परिवार इस 136 साल पुरानी पार्टी को जनता से पुनः जोड़ने और इसे संगठनात्मक रूप से मजबूत करने की योजना में सफल होगा या अपने राज्य स्तरीय नेताओं द्वारा खुद की पार्टियों का गठन कर लिया जाएगा।

पार्टी के नेताओं में इस दुविधा के कारण असुरक्षा का इतना गहरा भाव है कि गांधी परिवार की योजना और उसके अगले कदमों की प्रमाणिक जानकारी ना होने की वजह से मीडिया में अटकलों का बाजार गर्म रहा।

पार्टी में संशयवादियों का बोलबाला है जो कि एक ऐसे संगठन को कमजोर कर उसका कयामत का दिन ला रहे हैं, जिसने देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाई थी।

वर्तमान में राष्ट्रीय मीडिया द्वारा लोगों के समक्ष दो निश्चित संभावनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं। पहली में तो यदि कोई गैर गांधी पार्टी की कमान संभालकर सी.डब्ल्यू.सी.में खुद के निष्ठावानों को भरने के बाद गांधी परिवार को अलग-थलग कर देता है तो उस स्थिति में गांधी परिवार को भय है कि पार्टी पर नियंत्रण समाप्त हो जाएगा। इस संयोजन में गांधी परिवार को इतना असुरक्षित बताया गया है कि वो किसी भी कीमत पर कांग्रेस नेतृत्व नहीं छोड़ना चाहता।

दूसरी संभावना है कि गांधी परिवार पार्टी संगठन को लोकतांत्रिक बनाने में मदद करे और नया अध्यक्ष राहुल गांधी को पार्टी के दिन-प्रतिदिन के कामकाज से मुक्त कर दे ताकि वे पार्टी को बेखटके नेतृत्व प्रदान कर सके। पार्टी अध्यक्ष स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव से निर्वाचित किया जाता है और पार्टी का नया प्रमुख अन्य नेताओं से विचार-विमर्श कर पार्टी का नेतृत्व करता हैं।

अनुमान ये भी हैं कि हरियाणा में भूपिन्दर सिंह हूड़ा और कर्नाटक में

- एक अफवाह तो यह कि, गांधी परिवार बहुत असुरक्षित महसूस कर रहा है कि, अगर नये अध्यक्ष ने सी.डब्ल्यु.सी. में अपने समर्थक भर कर गांधी परिवार को अलग-थलग कर दिया, जैसा सीताराम केसरी ने किया था, तो गांधी परिवार क्या करेगा।
- दूसरी अफवाह है कि, क्षेत्रीय नेता, जो अपने इलाके में काफी पकड़ रखते हैं, जैसे हूडा व सिद्धारमैया, की ज्यादा नहीं चली तो ये लोग अपनी क्षेत्रीय पार्टी बनायेंगे और टुकड़े-टुकड़े होकर कांग्रेस खत्म हो जायेगी।
- एक चर्चा यह भी है कि, नये उदीयमान नेता, जैसे शशि थरूर, भी महत्वाकांक्षी हो गये हैं तथा कांग्रेस अध्यक्ष के लिये अपनी उम्मीदवारी जतायेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)